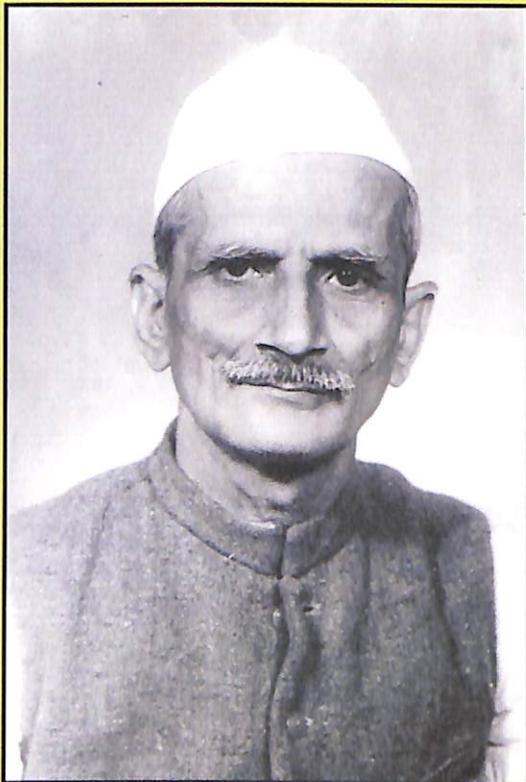


# रूपकत्रयी

[श्री जनकशङ्कर-मनुशङ्कर-दवे-विरचिता]

॥ शङ्करविजयम् ॥  
॥ पूर्ण सप्तर्षिमण्डलम् ॥  
॥ महावीरनिर्वाणम् ॥



सम्पादकः

प्रो. जतीनः पंड्या



राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्  
मानितविश्वविद्यालयः  
नवदेहली

## पुरोवाक्

साम्प्रतिकोऽयं समयो वर्तते संस्कृतभाषाया नवोन्मेषस्य नूतनसम्भावनानां च। अयं नवोन्मेषो नवीनाश्च सम्भावना समसामयिके संस्कृतसाहित्येऽपि प्रतिफलन्तीति शक्यं सुखमुच्छ्वसितुं सर्वैः सुरभारतीसेवकैः। यथा भारतीयप्रजाया दायं बिभ्राणास्ते ते तेजस्विनः पण्डिताः प्रकटयन्ति शास्त्रवैभवम्, तथैव नैके कवयन्ति परःशतं सुकवयः निबध्नन्ति च विविधान् ग्रन्थान् अगणिता साहित्यरचनानदीष्णाः सरस्वत्याः सुपुत्रा अस्यामेव भाषायाम्। वस्तुत ऊनविंश-विंशशतकयोर्विपुलं साहित्यं संस्कृते व्यरचयन्तेते सुधियः सुकवयः। तस्य साहित्यस्य बहुमूल्यानि रचनारत्नानि सम्प्रति लुप्तप्रायाणि। वीरेन्द्रकुमारभट्टाचार्य- हरिदाससिद्धान्तवागीशहषीकेशभट्टाचार्य- अप्याशास्त्रिराशिवडेकर-सदृक्षाणां कवितल्लाजानां समग्रं साहित्यमिदानीं न लभ्यते।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानेन एतादृशानामुत्तमोत्तमरचनाकाराणां लुप्तप्रायस्य साहित्यस्य पुनरुद्धाराय पुनःप्रकाशनाय च पदक्षेपो व्यधायि। अस्मिन्नुपक्रमे भट्टमथुरानाथशास्त्रिणां रतिनाङ्गावर्याणां मूलशङ्करमाणिकलालयाज्ञिकस्य च समग्राः रचनाः ग्रन्थावलीरूपेण प्रकाशिताः। अस्मिन्नेव क्रमे प्रकाशमायातीयं जनकशङ्कर-मनुशङ्कर-दवेविरचिता नाट्यत्रयी। अस्यां शङ्करविजयम्, पूर्णं सप्तर्षिमण्डलं, महाकीरनिर्वाणं चेति रूपकत्रयं सन्निविष्टम्। एतानि सर्वाणि रूपकाणि पूर्वं सवित्पत्रिकायां प्राकाशयं गतानि, परन्तु पुस्तकाकारेण इदम्प्रथमतया प्रकटीभवन्ति। अथ च महान् खलु हर्षस्यायं विषयो यदियं रूपकत्रयी ग्रन्थकर्तृणां श्रीमतां जनकशङ्कर-मनुशङ्कर-दवेवर्याणां जन्मशतीवर्षे प्रकाशमेतीति। संस्थानम् आचार्यजतीन्द्रपण्ड्यामहोदयायानां चाधर्मण्टां बिभर्ति येषां समृद्धमेनेयं सुलभतां प्राप।

दवेवर्याणां त्रीण्यपि रूपकाणि अतितरं रुचिराणि। कल्पनायाः प्रौढता, नवीना उद्भावना, गहनं शास्त्रानुशीलनं व्युत्पत्तेः परिपाकश्चैते

अनुक्रमः

पुरोवाक्  
सम्पादकीयम्

iii  
vi

प्रस्तावना	प्रा. जतीन पंड्या	१-३१
१ प्रास्ताविक		१
२ कर्ता का समय और जीवन		१
३ कृति परिचय		५
	(१) शङ्करविजयम्	५
	(२) पूर्ण सप्तर्षिमण्डलम्	१२
	(३) महावीरनिवरणम्	१७
४ समीक्षात्मक अवलोकन		२५
	(१) प्रास्ताविक	२५
	(२) नाटकों के पद्धतिगण	२६
	(३) छंद	२७
	(४) अलंकार	२७
	(५) भाषा	२७
	(६) प्रभावक बल	२८
	(७) समापन	३०

रुपकवायी श्री जनक द्वे ३३-३४९

१	शाङ्करविजयम्	(३२-९८)
२	पूर्ण सप्तर्षिमण्डलम्	(९९-१३९)
३	महावीरनिर्वाणम्	(१४०-२०९)

द्वितीय दृश्य में राजज्योतिष, भारद्वाज, महाश्रमण और महाराज सिद्धार्थ सर्पहत्या के प्रायश्चित्त के विषय में परामर्श करते हैं। वर्धमान प्रायश्चित्त के लिये आठ दिन का अनशन करने का प्रस्ताव रखता है। अनशन निर्जल होना चाहिए ऐसे नन्दिवर्धन के आग्रह से राज्यासनप्राप्ति के लिये चल रही गुप्त राजनीति की पुष्टि मिलती है। वर्धमान राजनीति से अलिप्त है। वह निर्जल अनशन के लिये संमति प्रगट करता है।

तृतीय दृश्य में राजनैतिक विवाद का निरूपण है। वर्धमान ही राजा बनना चाहिए ऐसे अभिग्राय भी व्यक्त होते हैं। मगर नन्दिवर्धन ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण राजपद पर उसके अधिकार को माननेवाले लोक भी हैं। साथ में वर्धमान क्षत्रियाणीपुत्र है या ब्राह्मणीपुत्र है ऐसा विवाद भी बलवत्तर होता जाता है। मगर वर्धमान इससे अलिप्त रहकर अपनी ज्ञानोपार्जन की प्रवृत्ति में ही मग्न है।

चतुर्थ दृश्य में वर्धमान की पत्नी यशोदा ने पुत्री को जन्म दिया है यह सुनकर वर्धमान प्रसन्न होता है क्यों कि इससे राजनैतिक प्रवाहों मन्द होने की संभवना उत्पन्न होती है।

यशोदा के निधन के पाँच वर्ष बीत जाने के पश्चात् पाँचवें दृश्य में वर्धमान अपनी पञ्च वर्षीय पुत्री प्रियदर्शना के भविष्य के बारे में चिन्तित दिखाई देता है। हालाँकि वर्धमान पुत्री का पिता होने से राजनैतिक प्रवृत्ति में थोड़ा परिवर्तन दिखाई देता है। वर्धमान की ज्ञान और मुक्ति के लिये उत्सुकता बढ़ती है। वर्धमान योग के अभ्यास के लिये योगाचार्य पतञ्जलि के पास जाने का सोचता है।

छठे दृश्य में योगाचार्य के आश्रम में भी वर्धमान की प्रवृत्ति पर नजर रखने का प्रयास कुटिल राजनीतिज्ञों करते हैं। मगर योगाचार्य ने उन्हें दूर करते हैं। वर्धमान योगाभ्यास में मग्न हो जाता है।

सातवें दृश्य में वर्धमान के पिता महाराज सिद्धार्थ के निधन से राजनैतिक प्रपञ्च बढ़ जाता है। वर्धमान को अपना



राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्  
मानितविश्वविद्यालयः  
नवदेहली